नारी को ही चढ़ाया जाता है। कहानी में कानम इस परम्परा को तोड़ने का हरसंभव प्रयास करती है परन्तु कानम की माता उसे समझाते हुए कहती है कि किसी लड़की को जबरन उठाना यहां की रीत व परम्परा है। जबरन विवाह की यह प्रथा सदियों से चली आ रही है। जिसे तोड़ना आसान नहीं है। इस बात पर कानम दुःख भरे शब्दों से कहती है– "मैं आपके दर्द को समझती हूं अम्मा। पर जहां परंपरा के नाम पर यह सबकुछ हो रहा हो, वहां किसी को पहल तो करनी ही होगी.....मेरे विचार से, दिस इज ए ग्रेट बिगनिंग।"4 अतः कानम परम्परा के इस बन्धन को तोड़ना चाहती है। परन्तु प्राचीन परम्परा होने के कारण आज भी वैसी की वैसी है। ऐसी परम्परा जिसे कोई कानून भी नहीं तोड़ सकता है। कानम इसे समाप्त करने के लिए सभी से लड़ती तथा झगड़ती है। तब माँ उसे समझाते हुए कहती है– "बेटे ! समाज, अदालत या उसके फैसले से बदलने वाला नहीं है। उसके रीति–रिवाजों की सीमाएं कहीं ऊंची हैं। भले ही उनमें दोष ज्यादा हैं। इन्हें दूर करने के लिए लोगों के बीच जाकर उनके विश्वास को जीतना होता है ताकि वे इनके अच्छे–बुरे नतीजों को समझ पाएं। मुझे विश्वास है हम ऐसा कर पाएंगे।"5 अतः माँ के इस विचारों को कानम अस्वीकार करती है और वह फैसला करती है कि अब वह पढ़ाई छोड़कर घर में माँ के साथ रहूंगी क्योंकि वह अब शहर से घर आना चाहती है। कानम के इस निर्णय से उसका पिता उसकी माँ पर गुस्सा करता है जैसा कि कहानी की निम्नलिखित पंक्तियों से व्यक्त होता है– "उस कलमुंही को तूने ही बुलाया होगा। वहीं मर–खप जाती। पहले क्या कम किया था जो अब होगा। बिरादरी क्या कहेगी। कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रहूंगा।"6 अतः कानम का पिता नहीं चाहता कि वह गाँव के पीड़ित लड़की की सहायता करे परन्तु कानम अपने पिता की बात को अस्वीकार करते हुए पीड़ित लड़की व उसके माता–पिता से मिलने उसके घर पहुंच जाती है। कानम को देखकर पूरा परिवार भावुक हो जाता है जैसा कि कहानियों की निम्नलिखित पंक्तियों से व्यक्त होता है– "बेटी ! तुम पहली लड़की हो जिसने ऐसा सोचा है या कहा है। तुम नहीं जानती उसके बाद हम पर क्या–कुछ गुजरी है....? भाईचारे से हमारा परिवार बेदखल कर दिया। कई जगह रिश्ते की बात की तो सभी ने मुंह छुपा लिया। अकेले रहकर समाज से कैसे लड़ा जा सकता है। हमारी ये परम्पराएं भीतर तक घुसी हैं। हमने तो बेटी की जिन्दगी ही तबाह कर दी। देख कैसी हो गई है इसकी शक्ल। जैसे बोलना भी भूल गई है। न कहीं आती है न जाती है। चूल्हे के पास सिर घुटनों में ड़ालकर रोया करती है।"7 कानम परिवार वालो की भावनाओं को समझती है और संवेदना प्रकट करते हुए कहती है–"मैं इसे अपने साथ ले जाती हूं। आप इसकी फिक्र मत करें। यह ठीक हो जाएगी। पहले जैसी।"8 अतः कानम पीड़ित लड़की को अपने साथ अपने घर ले जाती है लेकिन जब यह बात कानम के पिता को पता चलती है तो वह गुस्से से आग बबूला हो जाता है वह नहीं चाहता कि जिस लड़की के साथ समाज में इस प्रकार की घटना घटित हुई हो वह हमारे घर में रहे। उसे लगता है कि उस लड़की का घर में रहने के कारण उसके चुनाव प्रक्रिया पर कोई गलत असर पड़े। इसलिए वह कानम को खरी–खोटी सुनाते हुए कहता है– "कुलच्छणी। तू जानती है तूने क्या किया। मैं इलाके का परधान हूं परधान। क्या मुंह दिखाऊंगा लोगों को। थूकेंगे मेरे पर लोग। हरामजादी पैदा होते हुए ही क्यों नहीं मर गई ?।"9 कानम पिता के इन कठोर शब्दों को सहन नही कर पाती है और मुस्कराते हुए पिता से कहती है– "बड़े पापा ! मैं सुनम नहीं हूं कि दो चार गुण्ड़े आए, पीठ पर उठाया और अपने खूंटे बांध दिया।"10 अतः कहानी में जहां एक तरफ कानम अपने वजूद की लड़ाई लड़ रही है तो वहीं दूसरी तरफ कानम के पिता चुनाव जीतना चाहते हैं। पिता व बेटी की इस लड़ाई में कहानीकार स्पष्ट करते हैं कि हमारे समाज की यहीं विड़म्बना है कि समाज में व्याप्त अनेक ऐसी परम्पराएं है जिनमें केवल नारी को ही ठहराया दोषी जाता है। समाज की इन कुप्रथाओं को समाप्त करने के लिए विमर्श की अत्यन्त आवश्यकता है क्योंकि विमर्श का अर्थ ही मानवता के हित में निष्कर्ष निकालना है। कानम गाँव की साहसी लड़की है। वह पीड़ित लड़की को अपने साथ चंड़िका देवी के मन्दिर ले जाती है। रास्ते में कुछ युवक कानम को जबरदस्ती अपनी गाड़ी में बिठा देते हैं लेकिन कानम उन युवकों का साहसीपूर्वक सामना करती है। उन युवकों में एक युवक एम0एल0ए0 साहब का बेटा था जिसे कानम ने रास्ते में अधमरा छोड़ दिया था। यह बात गाँव में आग की तरह फैल जाती है। इस साहसी कार्य के लिए गाँव के युवक व युवतियां कानम को शाबाशी देते हैं। कानम सुरक्षित होकर अपने घर लौटती है जहां उसके माता–पिता उस पर गर्व महसूस करते हैं।

'दारोश' कहानी एक साथ कई प्रश्नों को खड़ा कर उनका युक्तियुक्त समाधान भी तलाशती है। यह कहानी अपनी प्रतिष्ठा को बचाए रखने के संघर्ष में नारी की समाज–सापेक्ष पहलकदमियों का दस्तावेज़ है। कहानी में नारी शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाने वाली साहसी कानम के माध्यम् से लेखक ने दिखाया

है कि आज वह उस परम्परा को खत्म करना चाह रही है, जो जनजातीय क्षेत्र में सदियों से कायम रही है। लेखक ने व्यक्त किया है कि पुरूष प्रधान समाज में प्रचलित कुछ ऐसी परम्पराएं हैं जिसमें केवल नारी ही प्रताड़ित होती रहती है। यदि वास्तव में नारी को इस प्रताड़ना से बाहर निकलना है तो इस परम्परा की जंजीरों को तोड़कर खुद को मुक्त करना होगा। लेखक ने स्पष्ट किया है कि कहानी में नारी पात्र कानम जैसी शिक्षित् युवती ही इस बेड़ी को तोड़ सकती है। कानम के इस प्रकार के प्रयासों से कहानी में अनेक बदलाव आते हैं तथा वह अन्य लड़कियों के लिए प्रेरणा बन जाती है। अतः दारोश कहानी इस मानसिकता को भी उजागर करती है कि निश्चित् तौर पर जब कभी इन परम्पराओं का आगाज हुआ होगा तो उनकी तह में कल्याण की भावना प्रमुख रही होगी क्योंकि परम्पराएं मानव हित से ही जुड़ी होती लेकिन भूमण्ड़लीकरण के इस युग में परम्पराओं का सही स्वरूप समाप्त होता जा रहा है। वास्तव में 'दारोश' सिर्फ एक कहानी मात्र न होकर दूषित–परम्पराओं के नाम पर स्त्री–समाज की शोषण से मुक्ति, उसके वजूद स्थापना–संघर्ष और इस संघर्ष में निरंतर सशक्त होने का दस्तावेज है। निश्चित् ही इस दस्तावेज की इबारत कानम और उस लड़की के परिवार द्धारा लिखी गई है, जो अन्याय के खिलाफ हाईकोर्ट की दहलीज तक पहुंचता है। अतः यह कहानी नए ढ़ंग से नारी विमर्श को केन्द्र में रखती है तथा नारी के विषय में सोच–विचार करने पर बाधित् करती है।

अतः कहा जा सकता है कि सुप्रसिद्ध कहानीकार एस0 आर0 हरनोट ने दारोश कहानी के माध्यम् से सामाजिक जीवन में आए बदलाव, बदलते जीवन की बढ़ती हुई विकृतियों को उभारकर सामने लाने का सफल प्रयास किया है। दारोश का कथानक कथाकार एस0 आर0 हरनोट के मन की उस पीड़ा से मुक्ति है जिसका क्रूर शिकार नारी समाज रहा है। इस कहानी की वास्तविकता यह है कि कहानी में लड़की को जबरन उठाकर ले जाना एक रीत है, परम्परा है। कानम इस रीत को नहीं समझती है। वह इस परम्परा को खत्म करने का बीड़ा उठाती है और अदालत में केस दायर करती है। वस्तुतः दारोश जैसी कहानी पाठक को सोचने–समझने तथा विचार विमर्श करने पर मजबूर करती है कि परम्पराओं का निर्वहन करना जरूरी है लेकिन यदि परम्पराएं उस रूढ़ि में बदल जाएं जो आपके जीवन के लिए घातक हो, तब उस परम्परा में बदलाव आवश्यक हो जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1 बल्लभदास तिवारी, हिन्दी काव्य में नारी, पृ0 65
2 सं0 जयप्रकाश कर्दम, दलित साहित्य (वार्षिकी) 2016, सम्यक् प्रकाशन, 32/3, पृ0 60
3 एस0 आर0 हरनोट, दारोश, पृ0 107
4 वही, पृ0 108
5 वही, पृ0 109
6 वही, पृ0 113
7 वही, पृ0 117
8 वही, पृ0 117
9 वही, पृ0 119
10 वही, पृ0 119

राजकीय महाविद्यालय शिलाई जिला सिरमौर हिमाचल प्रदेश 173027
reenasharma88358@gmail.com
Mob. 8580706076

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor:7.523 September 2024 Page No. : 115-119
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

डिजिटलीकरण का विकास एवं इसकी व्यापकता का अध्ययन

सुनील कुमार सहासक प्राध्यापक वाणिज्य
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी नैनीताल

सार
मोबाइल भुगतान, जिसे मोबाइल मनी, मोबाइल मनी ट्रांसफर और मोबाइल वॉलेट के रूप में भी जाना जाता है, आम तौर पर वित्तीय विनियमन के तहत संचालित और मोबाइल डिवाइस से या उसके माध्यम से की जाने वाली भुगतान सेवाओं को संदर्भित करता है। नकद, चेक या क्रेडिट कार्ड से भुगतान करने के बजाय, उपभोक्ता विभिन्न प्रकार की सेवाओं के लिए भुगतान करने के लिए मोबाइल का उपयोग कर सकता है। हम विकास की दुनिया में हैं जहां यह सब वस्तु विनिमय प्रणाली से शुरू हुआ जो बाद में पैसे के आदान–प्रदान में विकसित हुआ और जो है वर्तमान में कैशलेस अर्थव्यवस्था में विकसित हो रहा है। डिजिटल भुगतान पारिस्थितिकी तंत्र में निवेशकों के सामने साइबर सुरक्षा सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। डिजिटल भुगतान चुनने वाले उपयोगकर्ताओं की बढ़ती संख्या के साथ, ऑनलाइन धोखाधड़ी, पहचान की चोरी और मैलवेयर या वायरस हमलों जैसे साइबर सुरक्षा खतरों के संपर्क में आने की संभावना भी बढ़ रही है। ज्ञान की कमी और कमजोर मोबाइल भुगतान प्रणाली इन हमलों के बढ़ने का एक मुख्य कारण है। कुछ कदम जो इलेक्ट्रॉनिक लेनदेन की दीर्घकालिक सफलता सुनिश्चित करने में मदद कर सकते हैं, वे हैं एक व्यापक नियामक ढांचा, एक सक्रिय उपभोक्ता संरक्षण तंत्र, आत्मविश्वास और विश्वास–प्रूफ सुरक्षा उपाय, अधिक प्रतिबद्धता के अवसर और नकदी जैसे लाभ, उपयोग की सुविधा, व्यापक मान्यता, अनुमानित कम व्यापारिक लागत, आराम और तत्काल निपटान।

मुख्य शब्द डिजिटलीकरण, विकास

परिचय

वस्तु विनिमय और विनिमय के अन्य तरीकों पर आधारित मानव समाज के अस्तित्व में आने के समय से ही नकदी रहित समाज अस्तित्व में है, और आधुनिक समय में बिट कॉइन जैसी डिजिटल मुद्राओं का उपयोग करके नकदी रहित लेनदेन भी संभव हो गया है। गैर–सिक्का आधारित मुद्रा का उपयोग करने की अवधारणा प्रणाली का एक लंबा इतिहास है. हाल ही में ऐसी प्रणालियों का समर्थन करने वाली तकनीक व्यापक रूप से उपलब्ध हो गई है। जबकि नकद और क्रेडिट और डेबिट कार्ड जैसी भुगतान प्रणालियाँ अभी भी भुगतान परिदृश्य पर हावी हैं, खुदरा विक्रेताओं के बीच नवीनतम प्रवृत्ति मोबाइल भुगतान है।

मोबाइल भुगतान, जिसे मोबाइल मनी, मोबाइल मनी ट्रांसफर और मोबाइल वॉलेट के रूप में भी जाना जाता है, आम तौर पर वित्तीय विनियमन के तहत संचालित और मोबाइल डिवाइस से या उसके माध्यम से की जाने वाली भुगतान सेवाओं को संदर्भित करता है। नकद, चेक या क्रेडिट कार्ड से भुगतान करने के बजाय, उपभोक्ता विभिन्न प्रकार की सेवाओं के लिए भुगतान करने के लिए मोबाइल का उपयोग कर सकता है। हम विकास की दुनिया में हैं जहां यह सब वस्तु विनिमय प्रणाली से शुरू हुआ जो बाद में पैसे के आदान–प्रदान में विकसित हुआ और जो है वर्तमान में कैशलेस अर्थव्यवस्था में विकसित हो रहा है।

डिजिटलीकरण का विकास

डिजिटलीकरण के विकास के साथ कदम मिलाते हुए साइबर खतरे भी पीछे नहीं हैं। 2015 में भारत में साइबर क्राइम की 11,592 घटनाएं दर्ज की गईं। डिजिटल अर्थव्यवस्था के विस्तार के साथ, साइबर अपराध में तेजी इतनी बढ़ गई है कि अगर इसे ठीक से नहीं संभाला गया तो यह मौत की कगार तक पहुंच सकता है।

डिजीशाला जैसे उपायों के जरिए सरकार कैशलेस अर्थव्यवस्था के लिए अनुकूल माहौल बनाना चाहती है; नेशनल ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क (NFON) और यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (UPI), भारत इंटरफेस फॉर मनी (BHIM) जैसे कुछ उपायों से भुगतान की तेजी से स्वीकृति और डिजिटल हस्तांतरण को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। फिर भी, डिजिटल भुगतान पारिस्थितिकी तंत्र में, अंतिम–उपयोगकर्ता प्रोफ़ाइल में इस अचानक वृद्धि और बदलाव ने विभिन्न चुनौतियों को जन्म दिया है।

डिजिटल भुगतान पारिस्थितिकी तंत्र में निवेशकों के सामने साइबर सुरक्षा सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। डिजिटल भुगतान चुनने वाले उपयोगकर्ताओं की बढ़ती संख्या के साथ, ऑनलाइन धोखाधड़ी, पहचान की चोरी और मैलवेयर या वायरस हमलों जैसे साइबर सुरक्षा खतरों के संपर्क में आने की संभावना भी बढ़ रही है। ज्ञान की कमी और कमजोर मोबाइल भुगतान प्रणाली इन हमलों के बढ़ने का एक मुख्य कारण है। कुछ कदम जो इलेक्ट्रॉनिक लेनदेन की दीर्घकालिक सफलता सुनिश्चित करने में मदद कर सकते हैं, वे हैं एक व्यापक नियामक ढांचा, एक सक्रिय उपभोक्ता संरक्षण तंत्र, आत्मविश्वास और विश्वास–प्रूफ सुरक्षा उपाय, अधिक प्रतिबद्धता के अवसर और नकदी जैसे लाभ, उपयोग की सुविधा, व्यापक मान्यता, अनुमानित कम व्यापारिक लागत, आराम और तत्काल निपटान।

कैशलेस अर्थव्यवस्था – कैशलेस मोड और भुगतान के प्रकार

- **मोबाइल वॉलेट:** यह मूल रूप से आपके मोबाइल फोन पर उपलब्ध एक वर्चुअल वॉलेट है। आप ऑनलाइन या ऑफलाइन भुगतान करने के लिए अपने मोबाइल में नकदी जमा कर सकते हैं। विभिन्न सेवा प्रदाता इन वॉलेट को मोबाइल ऐप के माध्यम से पेश करते हैं, जिन्हें फोन पर डाउनलोड करना होता है। आप क्रेडिट/डेबिट कार्ड या नेट बैंकिंग का उपयोग करके इन वॉलेट में ऑनलाइन पैसे ट्रांसफर कर सकते हैं। इसका मतलब यह है कि हर बार जब आप बिल का भुगतान करते हैं या वॉलेट के माध्यम से ऑनलाइन खरीदारी करते हैं, तो आपको अपने कार्ड का विवरण नहीं देना होगा। आप इनका उपयोग बिलों का भुगतान करने और ऑनलाइन खरीदारी करने के लिए कर सकते हैं।
- **प्लास्टिक मनी:** इसमें क्रेडिट, डेबिट और प्रीपेड कार्ड शामिल हैं। उत्तरार्द्ध बैंकों या गैर–बैंकों द्वारा जारी किया जा सकता है और यह भौतिक या आभासी हो सकता है। इन्हें नेट बैंकिंग के माध्यम से ऑनलाइन खरीदा और रिचार्ज किया जा सकता है और इसका उपयोग ऑनलाइन या पॉइंट–ऑफ–सेल (पीओएस) खरीदारी करने के लिए किया जा सकता है, यहां तक कि उपहार कार्ड के रूप में भी दिया जा सकता है। कार्ड का उपयोग तीन प्राथमिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है – एटीएम से पैसे निकालने, ऑनलाइन भुगतान करने और दुकानों, रेस्तरां, ईंधन पंप आदि जैसे व्यापारी आउटलेट पर पीओएस टर्मिनलों पर खरीदारी या भुगतान के लिए स्वाइप करने के लिए।
- **नेट बैंकिंग:** इसमें कोई वॉलेट शामिल नहीं है और यह केवल एक बैंक खाते से दूसरे बैंक खाते, क्रेडिट कार्ड या किसी तीसरे पक्ष में धनराशि के ऑनलाइन हस्तांतरण की एक विधि है। आप इसे कंप्यूटर या मोबाइल फ़ोन के माध्यम से कर सकते हैं. इंटरनेट पर अपने बैंक खाते में लॉग इन करें और राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर (एनईएफटी), रीयल–टाइम ग्रॉस सेटलमेंट (आरटीजीएस) या तत्काल भुगतान सेवा (आईएमपीएस) के माध्यम से पैसे ट्रांसफर करें, ये सभी नाममात्र लेन–देन लागत पर आते हैं।

भारत पहले की तुलना में बहुत तेजी से डिजिटल भुगतान क्रांति में अन्य देशों में शामिल हो गया है, जहां हम अक्सर प्रौद्योगिकी को अपनाने में पीछे रह जाते थे, खासकर वित्तीय क्षेत्र में। इसका हमारे देश पर परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ना तय है, खासकर जब डिजिटल भुगतान ग्रामीण क्षेत्रों में फैल रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. डिजिटलीकरण के विकास का अध्ययन
2. कैशलेस अर्थव्यवस्था – कैशलेस मोड और भुगतान के प्रकार

ग्रामीण भारत में संभावनाएँ और आगे की राह

1. जन धन आधार मोबाइल (JAM) डिजिटल लेनदेन संस्कृति को प्रोत्साहित कर सकता है। यह फैलते हुए देश के कोने–कोने तक पहुंच रहा है। बड़ी संख्या में सरकारी हस्तांतरण (DBT)

JAM मोड के माध्यम से किए जाते हैं। इससे लोगों को डिजिटल लेन–देन के प्रति जागरूकता लाने में मदद मिलेगी।

2. इन मामलों में सरकार की भूमिका कुछ भुगतानों के लिए कैशलेस लेन–देन को अनिवार्य बनाने और एक निश्चित राशि से अधिक की कुछ सेवाओं के लिए इसे अनिवार्य बनाने की होगी जो पहले ही शुरू की जा चुकी है।
3. परिवारों द्वारा असंगठित क्षेत्र (घरेलू नौकर, सफाई कर्मचारी आदि) को वेतन के रूप में किए गए भुगतान पर कर छूट (मान लीजिए 1% से 2%) कैशलेस भुगतान को बढ़ावा दे सकती है। इससे दो काम होंगे, एक तो परिवारों को कैशलेस होने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा और दूसरा; असंगठित क्षेत्र का बड़ा हिस्सा आर्थिक रूप से शामिल होगा।
4. कैशलेस भुगतान उपकरणों के माध्यम से वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के 5 ए हैं जो उपलब्धता, पहुंच, स्वीकार्यता, सामर्थ्य और जागरूकता हैं।
5. सरकार को ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी आवश्यकताओं को सुनिश्चित करना चाहिए और बुनियादी ढांचे के विकास पर ध्यान देना चाहिए। स्कूलों, कॉलेजों, पंचायतों आदि के माध्यम से विशेष अभियान कैशलेस/बैंकिंग लेनदेन के बारे में जागरूकता पैदा करने में मदद कर सकते हैं।

डिजिटल भुगतान को प्रभावित करने वाले कारक

कई निजी डिजिटल वॉलेट कंपनियां ग्राहकों को मूल्यवर्धित सेवाएं दे रही हैं

1. **उपभोक्ताओं को उपयोग में आसानी**, कैशबैक ऑफर, अपने मोबाइल वॉलेट प्लेटफॉर्म का उपयोग करने पर छूट आदि के संदर्भ में मूल्य प्रस्ताव की पेशकश की जाती है।
2. **सरकार उपभोक्ताओं** को डिजिटल भुगतान की ओर आकर्षित करने के लिए विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं और पुरस्कार कार्यक्रमों की घोषणा कर रही है।
3. **आरबीआई ने अंतिम उपयोगकर्ताओं** के लिए लेनदेन की लागत को कम करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए बैंकरों और यूपीआई समाधानों के लिए क्रॉस लेन–देन लागत को कम या समाप्त कर दिया है।
4. अधिक पीओएस समाधान खरीदे जा रहे हैं और व्यापारियों को उपलब्ध कराए जा रहे हैं जो सिस्टम में सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।
5. जागरूकता कार्यक्रम शुरू करने और कई संभावित तरीकों (जैसे आधार कार्ड का उपयोग करके फीचर फोन आधारित डिजिटल हस्तांतरण आदि) को प्रोत्साहित करने से ग्रामीण क्षेत्र में डिजिटल भुगतान समाधानों पर विचार करने वाली अधिक संख्या में दुकानें और प्रतिष्ठान स्थापित हुए हैं।
6. **सरकार द्वारा आवंटित प्रोत्साहनः** आउटलेट्स में डेबिट/क्रेडिट कार्ड जैसे डिजिटल भुगतान का उपयोग करके ईंधन खरीद पर छूट डिजिटल लेनदेन को प्रोत्साहित करने की दिशा में रणनीतिक दृष्टिकोण का संकेत देती है।

ग्रामीण लोगों में कैशलेस लेन–देन के प्रति धारणा

कैशलेस अर्थव्यवस्था एक ऐसी स्थिति है जहां भौतिक मुद्राओं के बजाय डिजिटल मुद्राएं सभी आर्थिक लेन–देन करती हैं। कैशलेस इंडिया का मतलब है कैशलेस लेन–देन। 2012 में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह भारत में भ्रष्टाचार को कम करने के लिए इसे लेकर आए थे. बाद में वर्तमान भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा डिजिटल इंडिया पहल में कुछ जोड़ने के लिए और कैशलेस लेन–देन में सुधार के लिए काले धन को हटाने के लिए 2016 के विमुद्रीकरण में भी कदम उठाए गए।

नोटबंदी के बाद देश कैशलेस इकोनॉमी की ओर बढ़ रहा है। सरकार ने कैशलेस लेनदेन की दिशा में कदम को बढ़ावा देने के लिए इलेक्ट्रॉनिक लेन–देन पर अद्वितीय छूट और मुफ्त सुविधाएं विकसित की हैं। कतारों में खड़े होकर इंतजार करने की जरूरत नहीं, बैंक कर्मचारियों से बातचीत करने और ग्राहकों को संतुष्ट करने की जरूरत नहीं। नकदी रहित लेन–देन से कर चोरी, काला धन, भ्रष्टाचार, मनी लॉन्ड्रिंग में कमी आ सकती है, जीवन आसान हो सकता है और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल सकता है।

ज़िथमल और गिली (2016) का तर्क है कि स्कूली शिक्षा, कमाई और जन संचार प्रदर्शन और इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर (ईएफटी) के कार्यान्वयन के बीच एक अनुकूल संबंध है और यह कनेक्शन बुजुर्ग ग्राहकों की तुलना में युवा ग्राहकों के लिए अधिक था।

टेलर और टॉड (2016) और गेफेन और स्ट्राब (2016) को ष्कंप्यूटर सिस्टम की स्वीकृति के विभिन्न स्तरों वाले पुरुषों और महिलाओं द्वारा प्रौद्योगिकी को अपनाने पर सीधा प्रभाव पड़ता हुआ पाया गया है।